

श्रीहरिः

श्रीमन्महर्षि वेदव्यासप्रणीत

महाभारत

( पञ्चम खण्ड )

[ शान्तिपर्व ]

( सचित्र, सरल हिंदी-अनुवादसहित )



अनुवादक —

पण्डित रामनारायणदत्त शास्त्री पाण्डेय 'राम'



## शान्तिपर्व

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
( राजधर्मोपनिषत्समपर्व )					
१-	युधिष्ठिरके पास नारद आदि महर्षियोंका आगमन और युधिष्ठिरका कर्णके साथ अपना सम्बन्ध बताते हुए कर्णको शाप मिलनेका वृत्तान्त पूछना	४४२५	१७-	युधिष्ठिरद्वारा भीमकी बातका विरोध करते हुए मुनिवृत्तिकी और ज्ञानी महात्माओंकी प्रशंसा	४४५९
२-	नारदजीका कर्णको शाप प्राप्त होनेका प्रसङ्ग सुनाना	४४२८	१८-	अर्जुनका राजा जनक और उनकी रानीका दृष्टान्त देते हुए युधिष्ठिरको संन्यास ग्रहण करनेसे रोकना	४४६१
३-	कर्णको ब्रह्मास्त्रकी प्राप्ति और परशुरामजीका शाप	४४३०	१९-	युधिष्ठिरद्वारा अपने मतकी यथार्थताका प्रतिपादन	४४६४
४-	कर्णकी सहायतासे समागत राजाओंको पराजित करके दुर्योधनद्वारा स्वयंवरसे कलिङ्गराजकी कन्याका अपहरण	४४३२	२०-	मुनिवर देवस्थानका राजा युधिष्ठिरको वन-मुष्ठानके लिये प्रेरित करना	४४६६
५-	कर्णके बल और पराक्रमका वर्णन; उसके द्वारा जरासंधकी पराजय और जरासंधका कर्णको अश्वदेशमें भालिनी नगरीका राज्य प्रदान करना	४४३३	२१-	देवस्थान मुनिके द्वारा युधिष्ठिरके प्रति उत्तम धर्मका और वनवासी करनेका उपदेश	४४६७
६-	युधिष्ठिरकी विन्ता; कुन्तीका उन्हें समझाना और जियोको युधिष्ठिरका शाप	४४३४	२२-	सत्रियधर्मकी प्रशंसा करते हुए अर्जुनका पुनः राजा युधिष्ठिरको समझाना	४४६८
७-	युधिष्ठिरका अर्जुनसे आन्तरिक खेद प्रकट करते हुए अपने लिये राज्य छोड़कर वनमें चले जानेका प्रस्ताव करना	४४३५	२३-	व्यासजीका राजा और सितितकी कथा सुनाते हुए राजा सुयुम्नके दण्डधर्मपालनका महत्त्व सुनाकर युधिष्ठिरको राजधर्ममें ही हृदय देनेकी आज्ञा देना	४४६९
८-	अर्जुनका युधिष्ठिरके मतका निराकरण करते हुए उन्हें धनकी महत्ता बताना और राजधर्मके पालनके लिये जोर देते हुए वनानुष्ठानके लिये प्रेरित करना	४४३८	२४-	व्यासजीका युधिष्ठिरको राजा इयमीवका चरित्र सुनाकर उन्हें राजोचित कर्तव्यका पालन करनेके लिये जोर देना	४४७२
९-	युधिष्ठिरका धानप्रस्थ एवं संन्यासीके अनुसर जीवन व्यतीत करनेका निश्चय	४४४१	२५-	सेनजित्के उपदेशयुक्त उद्गारोंका उल्लेख करके व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना	४४७५
१०-	भीमसेनका राजाके लिये संन्यासका विरोध करते हुए अपने कर्तव्यके ही पालनपर जोर देना	४४४३	२६-	युधिष्ठिरके द्वारा धनके त्यागकी ही महत्ताका प्रतिपादन	४४७८
११-	अर्जुनका फलिरूपधारी इन्द्र और ऋषिवाल्मीकी के संवादका उल्लेखपूर्वक ग्रहण-धर्मके पालनपर जोर देना	४४४५	२७-	युधिष्ठिरको शोकवश सरीर त्याग देनेके लिये उद्यत देख व्यासजीका उन्हें उससे निवारण करके समझाना	४४८०
१२-	नकुलका ग्रहण-धर्मकी प्रशंसा करते हुए राजा युधिष्ठिरको समझाना	४४४७	२८-	अश्वमेध और जनकके संवादद्वारा प्रारम्भकी प्रवृत्ति बतलाते हुए व्यासजीका युधिष्ठिरको समझाना	४४८२
१३-	सहदेवका युधिष्ठिरको ममता और आसक्तिसे रहित होकर राज्य करनेकी सलाह देना	४४५०	२९-	भीष्मके द्वारा नारद-संन्यास-संवादके रूपमें सोलह राजाओंका उपाख्यान संक्षेपमें सुनाकर युधिष्ठिरके शोकनिवारणका प्रयत्न	४४८९
१४-	द्रौपदीका युधिष्ठिरको राजदण्डभारणपूर्वक धृष्टीका शासन करनेके लिये प्रेरित करना	४४५१	३०-	महर्षि नारद और पर्वतका उपाख्यान	४४९६
१५-	अर्जुनके द्वारा राजदण्डकी महत्ताका वर्णन	४४५४	३१-	सुवर्णहृषीके जन्म, मृत्यु और पुनर्जीवनका वृत्तान्त	४४९९
१६-	भीमसेनका राजाको शुक दुःशौकी स्मृति कराते हुए मोह छोड़कर मनको कायम करके राज्य-शासन और यज्ञके लिये प्रेरित करना	४४५७	३२-	व्यासजीका अनेक युक्तिवर्षे राजा युधिष्ठिरको समझाना	४५०२

- ३३-व्यासजीका युधिष्ठिरको समझते हुए कालकी प्रबलता बताकर देवासुर संग्रामके उदाहरणसे धर्मदोहियोंके दमनका औचित्य सिद्ध करना और प्रायश्चित्त करनेकी आवश्यकता बताना ... ४५०४
- ३४-जिन कर्मोंके करने और न करनेसे कर्ता प्रायश्चित्तका भागी होता और नहीं होता उनका विवेचन ... ४५०७
- ३५-पापकर्मके प्रायश्चित्तोंका वर्णन ... ४५०९
- ३६-स्वायम्भुव मनुके कथनानुसार धर्मका स्वरूप, पापसे छुड़िके लिये प्रायश्चित्त, अभय वस्तुओंका वर्णन तथा दानके अधिकारी एवं अनधिकारीका विवेचन ... ४५१२
- ३७-व्यासजी तथा भगवान् श्रीकृष्णकी आकांक्षे महाराज युधिष्ठिरका नगरमें प्रवेश ... ४५१६
- ३८-नगर-प्रवेशके समय पुरवसियों तथा ब्राह्मणों-द्वारा राजा युधिष्ठिरका सत्कार और उनपर आशेष करनेवाले चार्वाकका ब्राह्मणोंद्वारा वध ... ४५१९
- ३९-चार्वाकको प्राप्त हुए वर आदिका श्रीकृष्ण-द्वारा वर्णन ... ४५२१
- ४०-युधिष्ठिरका राज्याभिषेक ... ४५२२
- ४१-राजा युधिष्ठिरका घृतराष्ट्रके अर्चन रहकर राज्यकी व्यवस्थाके लिये भाइयों तथा अन्य लोगोंको विभिन्न कार्योंपर नियुक्त करना ... ४५२४
- ४२-राजा युधिष्ठिर तथा घृतराष्ट्रका युद्धमें मारे गये सगे सम्बन्धियों तथा अन्य राजाओंके लिये श्राद्धकर्म करना ... ४५२५
- ४३-युधिष्ठिरद्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति ... ४५२६
- ४४-महाराज युधिष्ठिरके लिये हुए विभिन्न भक्तियोंमें भीमसेन आदि सय भाइयोंका प्रवेश और विभाम ... ४५२७
- ४५-युधिष्ठिरके द्वारा ब्राह्मणों तथा आश्रितोंका सत्कार एवं दान और श्रीकृष्णके पास जाकर उनकी स्तुति करते हुए कृतज्ञता-प्रकाशन ... ४५२८
- ४६-युधिष्ठिर और श्रीकृष्णका संवाद, श्रीकृष्णद्वारा भीष्मकी प्रशंसा और युधिष्ठिरको उनके पास चलनेका आदेश ... ४५३०
- ४७-भीष्मद्वारा भगवान् श्रीकृष्णकी स्तुति—भीष्मस्वराज ... ४५३१
- ४८-परशुरामजीद्वारा होनेवाले क्षत्रियसंहारके विषयमें राजा युधिष्ठिरका प्रश्न ... ४५४१
- ४९-परशुरामजीके उपाख्यानमें क्षत्रियोंके विनाश और पुनः उत्पन्न होनेकी कथा ... ४५४२
- ५०-श्रीकृष्णद्वारा भीष्मजीके गुण-प्रभावका सविस्तर वर्णन ... ४५४८
- ५१-भीष्मके द्वारा श्रीकृष्णकी स्तुति तथा श्रीकृष्ण-का भीष्मकी प्रशंसा करते हुए उन्हें युधिष्ठिरके लिये धर्मोपदेश करनेका आदेश ... ४५५०
- ५२-भीष्मका अपनी असमर्थता प्रकट करना, भगवान्का उन्हें वर देना तथा ऋषियों एवं पाण्डवोंका दूसरे दिन जानेका संकेत करके वहाँसे विदा होकर अपने-अपने स्थानोंको जाना ... ४५५१
- ५३-भगवान् श्रीकृष्णकी प्रातःशर्पा, सत्यकिद्वारा उनका संदेश पाकर भाइयोंसहित युधिष्ठिरका उन्हींके साथ कुक्षेत्रमें पधारना ... ४५५४
- ५४-भगवान् श्रीकृष्ण और भीष्मजीकी बातचीत ... ४५५६
- ५५-भीष्मका युधिष्ठिरके गुण-कथनपूर्वक उनको प्रश्न करनेका आदेश देना, श्रीकृष्णका उनके लज्जित और भयभीत होनेका कारण बताना और भीष्मका आश्वासन पाकर युधिष्ठिरका उनके समीप जाना ... ४५५८
- ५६-युधिष्ठिरके पूछनेपर भीष्मके द्वारा राजधर्मका वर्णन, राजाके लिये पुरुषार्थ और सत्यकी आवश्यकता, ब्राह्मणोंकी अदण्डनीयता तथा राजाकी परिहासशीलता और मृत्युताले प्रकट होनेवाले दोष ... ४५६०
- ५७-राजाके धर्मानुकूल नीतिपूर्ण चर्चाका वर्णन ... ४५६४
- ५८-भीष्मद्वारा राज्यवस्थाके साधनोंका वर्णन तथा संघाके समय युधिष्ठिर आदिका निदा होना और रास्तेमें स्नान-संध्यादि नित्यकर्मसे निवृत्त होकर हस्तिनापुरमें प्रवेश ... ४५६७
- ५९-ब्रह्माजीके नीतिशास्त्रका तथा राजा पृथुके चरित्रका वर्णन ... ४५६९
- ६०-वर्णधर्मका वर्णन ... ४५७८
- ६१-आश्रमधर्मका वर्णन ... ४५८१
- ६२-ब्राह्मणधर्म और कर्तव्यपालनका महत्त्व ... ४५८४
- ६३-वर्णाश्रमधर्मका वर्णन तथा राजधर्मकी श्रेष्ठता ... ४५८५
- ६४-राजधर्मकी श्रेष्ठताका वर्णन और इस विषयमें इन्द्ररूपधारी विष्णु और मान्धाताका संवाद ... ४५८७
- ६५-इन्द्ररूपधारी विष्णु और मान्धाताका संवाद ... ४५९०
- ६६-राजधर्मके पालनसे चारों आश्रमोंके धर्मका फल मिलनेका कथन ... ४५९२
- ६७-राष्ट्रकी रक्षा और उन्नतिके लिये राजाकी आवश्यकताका प्रतिपादन ... ४५९५
- ६८-बसुमना और बृहस्पतिके संवादमें राजाके न होनेसे प्रजाकी हानि और होनेसे लाभका वर्णन ... ४५९७
- ६९-राजाके प्रधान कर्तव्योंका तथा दण्डनीतिके द्वारा जुगोंके निर्माणका वर्णन ... ४६०१

७०-राजाको इहलोक और परलोकमें सुखकी प्राप्ति  
करानेवाले छत्तीस गुणोंका वर्णन ... ४६०८

७१-धर्मपूर्वक प्रजाका पालन ही राजाका महान्  
धर्म है; इसका प्रतिपादन ... ४६०९

७२-राजाके लिये सदाचारी विद्वान् पुरोहितकी  
आवश्यकता तथा प्रजापालनका महत्त्व ... ४६१२

७३-विद्वान् सदाचारी पुरोहितकी आवश्यकता तथा  
ब्राह्मण और क्षत्रियमें मेल रहनेसे लाभ-  
विविध राजा पुरुरवाका उपाख्यान ... ४६१३

७४-ब्राह्मण और क्षत्रियके मेलसे लाभका प्रतिपादन  
करनेवाला मुचुकुन्दका उपाख्यान ... ४६१७

७५-राजाके कर्तव्यका वर्णन; सुषिष्ठिरका राज्यसे  
विरक्त होना एवं भीष्मजीका पुनः राज्यकी  
महिमा सुनाना ... ४६१८

७६-उत्तम-अधम ब्राह्मणोंके साथ राजाका वर्तन ... ४६२१

७७-केकयराजा तथा राक्षसका उपाख्यान और  
केकयरान्यकी श्रेष्ठताका निस्तुत वर्णन ... ४६२२

७८-आपत्तिकालमें ब्राह्मणके लिये वैश्यवृत्तिसे  
निर्वाह करनेकी छूट तथा छुटेरोंसे अपनी और  
दूसरोंकी रक्षा करनेके लिये सभी जातियोंको  
शस्त्रधारण करनेका अधिकार एवं रक्षकको  
सम्मानका पात्र स्वीकार करना ... ४६२५

७९-श्रुतियोंके लक्षण, यज्ञ और दक्षिणाका महत्त्व  
तथा तपकी श्रेष्ठता ... ४६२८

८०-राजाके लिये मित्र और अमित्रकी पहचान तथा  
उन सबके साथ नीतिपूर्ण वर्तनका और  
मन्त्रीके लक्षणोंका वर्णन ... ४६२९

८१-कुटुम्बीजनमें दलबंदी होनेपर उस कुलके  
प्रधान पुरुषको क्या करना चाहिये? इसके  
विषयमें भीष्मपुत्र और नारदजीका संवाद ... ४६३२

८२-मन्त्रियोंकी परीक्षाके विषयमें तथा राजा और  
राजकीय मनुष्योंसे स्तर्क रहनेके विषयमें  
कालकवृक्षीय मुनिका उपाख्यान ... ४६३५

८३-सभासद आदिके लक्षण; गुप्त सभाह सुननेके  
अधिकारी और अनधिकारी तथा गुप्त-  
मन्त्रणाकी विधि एवं स्थानका निर्देश ... ४६४०

८४-इन्द्र और बृहस्पतिके संवादमें सान्त्वनापूर्ण  
मधुर वचन बोलनेका महत्त्व ... ४६४३

८५-राजाकी व्यावहारिक नीति; मन्त्रिमण्डलका  
संघटन; दण्डका औचित्य तथा दूत, द्वापाल,  
शिरोरक्षक, मन्त्री और सेनापतिके गुण ... ४६४४

८६-राजाके निवासयोग्य नगर एवं दुर्गका वर्णन;  
उसके लिये प्रजापालनसम्बन्धी व्यवहार तथा  
सम्स्वीजनके समादरका निर्देश ... ४६४७

८७-राष्ट्रकी रक्षा तथा वृद्धिके उपाय ... ४६४९

८८-प्रजासे कर लेने तथा कोश संग्रह करनेका प्रकार ४६५२

८९-राजाके कर्तव्यका वर्णन ... ४६५४

९०-उत्तम्यका मान्यताको उपदेश—राजाके लिये  
धर्मपालनकी आवश्यकता ... ४६५६

९१-उत्तम्यके उपदेशमें धर्माचरणका महत्त्व और  
राजाके धर्मका वर्णन ... ४६५९

९२-राजाके धर्मपूर्वक आचारके विषयमें वाम-  
देवजीका वसुमनाको उपदेश ... ४६६३

९३-वामदेवजीके द्वारा राजोचित वर्तनका वर्णन ४६६४

९४-वामदेवके उपदेशमें राजा और राज्यके लिये  
हितकर वर्तन ... ४६६७

९५-विजयाभिलाषी राजाके धर्मानुकूल वर्तन  
तथा मुदनीतिका वर्णन ... ४६६८

९६-राजाके छलरहित धर्मयुक्त वर्तनकी प्रशंसा ४६६९

९७-शूरवीर क्षत्रियोंके कर्तव्यका तथा उनकी  
आत्मवृद्धि और सन्नतिका वर्णन ... ४६७१

९८-इन्द्र और अम्बरीषके संवादमें नदी और  
वज्रके रूपकोंका वर्णन तथा समरभूमिमें  
जुझते हुए मारे जानेवाले शूरवीरोंको उत्तम  
लोकोंकी प्राप्ति का कथन ... ४६७३

९९-शूरवीरोंको स्वर्ग और कायरोंको नरककी  
प्राप्तिके विषयमें मिथिलेश्वर जनकका इतिहास ४६७८

१००-सैन्यसंचालनकी रीति-नीतिका वर्णन ... ४६७९

१०१-भिन्न-भिन्न देशके योद्धाओंके स्वभाव; रूप;  
बल, आचरण और लक्षणोंका वर्णन ... ४६८३

१०२-विजयसूचक शुभाशुभ लक्षणोंका तथा उत्साही  
और बलवान् सैनिकोंका वर्णन एवं राजाको  
मुदसम्बन्धी नीतिका निर्देश ... ४६८४

१०३-राज्यको वशमें करनेके लिये राजाको किस  
नीतिसे काम लेना चाहिये और युद्धोंको कैसे  
पहचानना चाहिये—इसके विषयमें इन्द्र  
और बृहस्पतिका संवाद ... ४६८७

१०४-राज्य, सज्जाना और सेना आदिसे बञ्चित  
हुए असहाय क्षेमदर्शी राजाके प्रति कालक-  
वृक्षीय मुनिका वैराग्यपूर्ण उपदेश ४६९१

१०५-कालकवृक्षीय मुनिके द्वारा गये हुए राज्य-  
की प्राप्ति के लिये विभिन्न उपायोंका वर्णन ... ४६९५

१०६-कालकवृक्षीय मुनिका विदेहराज तथा  
कोसलराजकुमारमें मेल कराना और विदेह-  
राजका कोसलराजको अन्तः जामाता बना लेना ४६९७

१०७-गणतन्त्र राज्यका वर्णन और उसकी नीति ... ४६९९

१०८-माता-पिता तथा गुरुकी सेवाका महत्त्व ... ४७०२

- १०९-सत्य-असत्यका विवेचन; धर्मका लक्षण तथा व्यावहारिक नीतिका वर्णन ... ४७०४
- ११०-सदाचार और ईश्वरभक्ति आदिको दुःखोंसे छूटनेका उपाय बताना ... ४७०६
- १११-मनुष्यके स्वभावकी पहचान बतानेवाली बात और सियारकी कथा ... ४७१९
- ११२-एक तपस्वी ऊँटके आलस्यका कुपरिणाम और राजाका कर्तव्य ... ४७१५
- ११३-शक्तिशाली शत्रुके सामने बैतकी भाँति नत-मस्तक होनेका उपदेश—सरिताओं और समुद्रका संवाद ... ४७१६
- ११४-बुद्ध मनुष्यद्वारा की हुई निन्दाको खड़े लेनेसे लाभ ... ४७१७
- ११५-राजा तथा राजसेवकोंके आवश्यक गुण ... ४७१९
- ११६-सज्जनोंके चरित्रके विषयमें दृष्टान्तरूपसे एक महर्षि और कुत्तेकी कथा ... ४७२०
- ११७-कुत्तेका शरभकी योनिमें जाकर महर्षिके शापसे पुनः कुत्ता हो जाना ... ४७२२
- ११८-राजाके सेवक, सचिव तथा सेनापति आदि और राजाके उत्तमगुणोंका वर्णन एवं उनसे लाभ ... ४७२४
- ११९-सेवकोंको उनके योग्य स्थानपर नियुक्त करने, कुलीन और सत्पुरुषोंका संग्रह करने, कोष बढ़ाने तथा सबकी देखभाल करनेके लिये राजाको प्रेरणा ... ४७२६
- १२०-राजधर्मका साररूपमें वर्णन ... ४७२८
- १२१-दण्डके स्वरूप, नाम, लक्षण, प्रभाव और प्रयोगका वर्णन ... ४७३२
- १२२-दण्डकी उत्पत्ति तथा उसके क्षमियोंके हाथमें आनेकी परम्पराका वर्णन ... ४७३४
- १२३-विषर्गका विचार तथा पापके कारण पदच्युत हुए राजाके पुनर्हाथानके विषयमें आश्वरिष्ठ और कामन्दकका संवाद ... ४७३९
- १२४-इन्द्र और प्रह्लादकी कथा—शीलका प्रभाव, शीलके अभावमें धर्म, सत्य, सदाचार, बल और लक्ष्मीके न रहनेका वर्णन ... ४७४१
- १२५-मुभिष्ठिरका आद्याविषयक प्रश्न—उत्तरमें राजा सुमित्र और श्रृणभनामक श्रृष्टिके इतिहासका आरम्भ; उसमें राजा सुमित्रका एक मृगके पीछे दौड़ना ... ४७४६
- १२६-राजा सुमित्रका मृगकी खोज करते हुए तपस्वी मुनिघोंके आश्रमपर पहुँचना और उनसे आशाके विषयमें प्रश्न करना ... ४७४७
- १२७-श्रृणभका राजा सुमित्रको वीरगुण और तनु मुनिका वृत्तान्त सुनाना ... ४७४८
- १२८-तनु मुनिका राजा वीरगुणको आशाके स्वरूपका परिचय देना और श्रृणभके उपदेशसे सुमित्रका आशाकी त्याग देना ... ४७५०
- १२९-बम और गौतमका संवाद ... ४७५२
- १३०-आपत्तिके समय राजाका धर्म ... ४७५३
- ( आपद्धर्मपर्व )
- १३१-आपत्तिग्रस्त राजाके कर्तव्यका वर्णन ... ४७५६
- १३२-ब्राह्मणों और श्रेष्ठ राजाओंके धर्मका वर्णन तथा धर्मकी गतिको सूक्त बताना ... ४७५८
- १३३-राजाके लिये कोशसंग्रहकी आवश्यकता; मर्यादाकी स्थापना और अमर्यादित दस्तु-वृत्तिकी निन्दा ... ४७५९
- १३४-बलकी महत्ता और पापसे छूटनेका प्रायश्चित्त ... ४७६१
- १३५-मर्यादाका पालन करने-करानेवाले कायव्य-नामक दस्तुकी सहस्रिका वर्णन ... ४७६२
- १३६-राजा किसका धन ले और किसका न ले तथा किसके साथ कैसा बर्ताव करे—इसका विचार ... ४७६४
- १३७-आनेवाले संकटसे सावधान रहनेके लिये दूरदर्शी, उत्काल्म और दीर्घजी—इन तीन मत्स्योंका दृष्टान्त ... ४७६५
- १३८-शत्रुओंसे घिरे हुए राजाके कर्तव्यके विषयमें बिटाल और चूहेका आख्यान ... ४७६६
- १३९-शत्रुसे सदा सावधान रहनेके विषयमें राजा ब्रह्मदत्त और पूजनी चिह्निकाका संवाद ... ४७८०
- १४०-भारद्वाज कणिकक सौराष्ट्रदेशके राजाको कूटनीतिका उपदेश ... ४७८७
- १४१-ब्राह्मण भयंकर संकटकालमें किस तरह जीवन-निर्वाह करे? इस विषयमें विश्वामित्र मुनि और चाणक्यका संवाद ... ४७९३
- १४२-आपत्तिकालमें राजाके धर्मका निश्चय तथा उत्तम ब्राह्मणोंके सेवनका आदेश ... ४८००
- १४३-शरणागतकी रक्षा करनेके विषयमें एक बहेलिये और कपोत-कपोतिका प्रसङ्ग; सर्वसि पीडित हुए बहेलियेका एक वृक्षके नीचे जाकर सोना ... ४८०३
- १४४-कबूतरद्वारा अपनी भार्याका गुणगान तथा पतिव्रता स्त्रीकी प्रशंसा ... ४८०५
- १४५-कबूतरकी कबूतरसे शरणागत व्याधकी सेवाके लिये प्रार्थना ... ४८०६
- १४६-कबूतरके द्वारा अतिमि-लक्ष्मण और अपने शरीरका बहेलियेके लिये पत्तियाँ ... ४८०७
- १४७-बहेलियेका वैराग्य ... ४८०९
- १४८-कबूतरकी निष्ठा और अग्निमें प्रवेश तथा उन दोनोंको स्वर्गलोककी प्राप्ति ... ४८०९

- १४९-बहेलियेको स्वर्गलोककी प्राप्ति ... ४८१०  
 १५०-इन्द्रोत मुनिका राजा जनमेजयको फटकारना ४८११  
 १५१-ब्रह्महत्याके अपराधी जनमेजयका इन्द्रोत मुनिकी शरणमें जाना और इन्द्रोत मुनिका उससे ब्राह्मणद्रोह न करनेकी प्रतिज्ञा कराकर उसे शरण देना ... ४८१२  
 १५२-इन्द्रोतका जनमेजयको धर्मोपदेश करके उससे अश्वमेधयज्ञका अनुष्ठान कराना तथा निष्ठाप राजाका पुनः अपने राज्यमें प्रवेश ४८१४  
 १५३-भूतककी पुनर्जीवन-प्राप्तिके विषयमें एक ब्राह्मण बालकके जीवित होनेकी कथामें गौध और सिमारकी बुद्धिमत्ता ... ४८१७  
 १५४-नारदजीका सेमल-वृक्षसे प्रशंसापूर्वक प्रश्न ... ४८२५  
 १५५-नारदजीका सेमलवृक्षको उत्तम अहंकार देखकर फटकारना ... ४८२६  
 १५६-नारदजीकी बात सुनकर वायुका सेमलको भनकाना और सेमलका वायुको तिरस्कृत करके विचारमग्न होना ... ४८२७  
 १५७-सेमलका हार स्वीकार करना तथा बलवान्‌के साथ वैर न करनेका उपदेश ... ४८२८  
 १५८-समस्त अनर्थोंका कारण लोभको बताकर उससे होनेवाले विभिन्न पापोंका वर्णन तथा श्रेष्ठ महापुरुषोंके लक्षण ... ४८२९  
 १५९-अज्ञान और लोभको एक दूसरेका कारण बताकर दोनोंकी एकता करना और दोनोंको ही समस्त दोषोंका कारण सिद्ध करना ... ४८३२  
 १६०-मन और इन्द्रियोंके संयमरूप दमका महात्म्य ४८३३  
 १६१-तपकी महिमा ... ४८३५  
 १६२-सत्यके लक्षण, स्वरूप और महिमाका वर्णन ४८३६  
 १६३-काम, क्रोध आदि तेरह दोषोंका निरूपण और उनके नाशका उपाय ... ४८३८  
 १६४-नृशंस अर्थात् अत्यन्त नीच पुरुषके लक्षण ४८३९  
 १६५-नाना प्रकारके पापों और उनके प्रायश्चित्तोंका वर्णन ... ४८४०  
 १६६-स्वप्नकी उत्पत्ति और प्राप्तिकी परम्पराकी महिमाका वर्णन ... ४८४६  
 १६७-धर्म, धर्म और कामके विषयमें विदुर तथा पाण्डवोंके पृथक्-पृथक् विचार तथा अन्तमें युधिष्ठिरका निर्णय ... ४८५१  
 १६८-मित्र बनाने एवं न बनानेयोग्य पुरुषोंके लक्षण तथा कृतघ्न गौतमकी कथाका आरम्भ ४८५५  
 १६९-गौतमका समुद्रकी ओर प्रस्थान और संघ्याके समय एक दिव्य वक् पक्षीके घरपर अतिथि होना ४८५८

- १७०-गौतमका राजधर्माद्वारा आतिथ्य-सत्कार और उसका राजसराज विरूपाक्षके भवनमें प्रवेश ४८६०  
 १७१-गौतमका राजसराजके यहाँसे सुवर्णरुपि लेकर लौटना और अपने मित्र वक्‌के वधका वृणित विचार मनमें लाना ... ४८६१  
 १७२-कृतघ्न गौतमद्वारा मित्र राजधर्माका वध तथा राजसौदाम्य उसकी हत्या और कृतघ्नके मांस-को अभक्ष्य बताना ... ४८६३  
 १७३-राजधर्मा और गौतमका पुनः जीवित होना ४८६५

### ( मोक्षधर्मपर्व )

- १७४-शोकाकुल चित्तकी शान्तिके लिये राजा सेनवित् और ब्राह्मणके संवादका वर्णन ... ४८६७  
 १७५-अपने कल्याणकी इच्छा रखनेवाले पुरुषका क्या कर्तव्य है; इस विषयमें पिताके प्रति पुत्र-द्वारा ज्ञानका उपदेश ... ४८७१  
 १७६-स्वागकी महिमाके विषयमें शम्पाक ब्राह्मणका उपदेश ... ४८७४  
 १७७-मङ्गि-गीता—धनकी तुष्णासे दुःख और उसकी कामनाके त्यागसे परम सुखकी प्राप्ति ... ४८७६  
 १७८-जनककी उक्ति तथा राजा नहुषके प्रश्नोंके उत्तरमें वोध्यगीता ... ४८८०  
 १७९-प्रह्लाद और अवधूतका संवाद—आजगर-वृत्तिकी प्रशंसा ... ४८८१  
 १८०-सद्बुद्धिका आश्रय लेकर आत्महत्यादि पाप-कर्मसे निवृत्त होनेके सम्बन्धमें काश्यप ब्राह्मण और इन्द्रका संवाद ... ४८८४  
 १८१-शुभाशुभ कर्मोंका परिणाम कर्ताको अवश्य भोगना पड़ता है; इसका पतिपादन ... ४८८७  
 १८२-भरद्वाज और भृगुके संवादमें जगत्‌की उत्पत्तिका और विभिन्न तत्त्वोंका वर्णन ... ४८८९  
 १८३-आकाशसे अन्य चार स्थूल भूतोंकी उत्पत्ति-का वर्णन ... ४८९१  
 १८४-पञ्चमहाभूतोंके गुणका विस्तारपूर्वक वर्णन ४८९३  
 १८५-शरीरके भीतर जठरानल तथा प्राण-अपान आदि-वायुओंकी स्थिति आदिका वर्णन ... ४८९६  
 १८६-जीवकी सत्तापर नाना प्रकारकी युक्तियोंसे शङ्का उपस्थित करना ... ४८९७  
 १८७-जीवकी सत्ता तथा नित्यताको युक्तियोंसे सिद्ध करना ... ४८९८  
 १८८-वर्णविभागपूर्वक मनुष्योंकी और समस्त प्राणियोंकी उत्पत्तिका वर्णन ... ४९०१  
 १८९-चारों वर्णोंके अलग-अलग कर्मोंका और सदा-चारका वर्णन तथा वैराग्यसे परब्रह्मकी प्राप्ति ४९०२



- १९०—सत्यकी महिमा, असत्यके दोष तथा लोक और परलोकके सुख-दुःखका विवेचन ... ४९०३
- १९१—ब्रह्मचर्य और गार्हस्थ्य-आश्रमोंके धर्मका वर्णन ४९०५
- १९२—वानप्रस्थ और संन्यास-धर्मोंका वर्णन तथा हिमालयके उत्तर पार्श्वमें स्थित उत्कृष्ट लोककी विलक्षणता एवं महाका प्रतीपादन, भृगु-भरद्वाज-संवादका उपसंहार ... ४९०७
- १९३—शिखाचारका फलसहित वर्णन, पापको छिपाने-से हानि और धर्मकी प्रशंसा ... ४९१०
- १९४—अध्यात्मज्ञानका निरूपण ... ४९१३
- १९५—ध्यानयोगका वर्णन ... ४९१७
- १९६—अपत्यके विषयमें युधिष्ठिरका प्रश्न, उसके उत्तरमें जप और ध्यानकी महिमा और उसका फल ... ४९१९
- १९७—जापकमें दोष आनेके कारण उसे नरककी प्राप्ति ४९२०
- १९८—परमधामके अधिकारी जापकके लिये देवलोक भी नरकतुल्य हैं—इसका प्रतीपादन ... ४९२२
- १९९—जापकको सावित्रीका करदान, उसके पाप धर्म, यम और काल आदिका आगमन, राजा इक्ष्वाकु और जापक ब्राह्मणका संवाद, सत्यकी महिमा तथा जापककी परमगति का वर्णन ... ४९२३
- २००—जापक ब्राह्मण और राजा इक्ष्वाकुकी उत्तम गति का वर्णन तथा जापकको मिलनेवाले फलकी उत्कृष्टता ... ४९३२
- २०१—बृहस्पतिके प्रश्नके उत्तरमें मनुद्राग कामनाओंके त्यागकी एवं ज्ञानकी प्रशंसा तथा परमात्मतत्त्वका निरूपण ... ४९३४
- २०२—आत्मतत्त्वका और बुद्धि आदि प्राकृत पदार्थों का विवेचन तथा उसके साक्षात्कारका उपाय ४९३७
- २०३—शरीर, इन्द्रिय और मन-बुद्धिसे अतिरिक्त आत्माकी नित्य-सत्ताका प्रतीपादन ... ४९४०
- २०४—आत्मा एवं परमात्माके साक्षात्कारका उपाय तथा महत्त्व ... ४९४२
- २०५—परब्रह्मकी प्राप्ति का उपाय ... ४९४३
- २०६—परमात्मतत्त्वका निरूपण, मनु-बृहस्पति-संवाद-की समाप्ति ... ४९४५
- २०७—श्रीकृष्णसे सम्पूर्ण भूतोंकी उत्पत्ति तथा उनकी महिमा का कथन ... ४९४८
- २०८—ब्रह्माके पुत्र मरीचि आदि प्रजापतिवृक्षोंके वंशका तथा प्रत्येक दिशामें निवास करनेवाले महर्षियोंका वर्णन ... ४९५१
- २०९—भगवान् विष्णुका बराबरूपमें प्रकट होकर देवताओंकी रक्षा और दानवोंका विनाश कर देना तथा नारदकी अनुस्मृतिसौत्रका उपदेश और नारदद्वारा भगवान्की स्तुति ... ४९५४
- २१०—गुरु-शिष्यके संवादका उत्प्रेषण करते हुए श्रीकृष्ण-सम्बन्धी अध्यात्मतत्त्वका वर्णन ... ४९६२
- २११—संसारचक्र और जीवात्माकी स्थितिका वर्णन ४९६५
- २१२—निषिद्ध आचरणके त्याग, तप, रज और तमके कार्य एवं परिणामका तथा सत्त्वगुणके केवल उपदेश ... ४९६६
- २१३—जीवोत्पत्तिका वर्णन करते हुए दोनों और बन्धनोंसे मुक्त होनेके लिये विषयासक्तिके त्यागका उपदेश ... ४९६८
- २१४—ब्रह्मचर्य तथा वैराग्यसे मुक्ति ... ४९७०
- २१५—आसक्ति छोड़कर सनातन ब्रह्मकी प्राप्ति के लिये प्रयत्न करनेका उपदेश ... ४९७२
- २१६—स्वप्न और सुषुप्ति-अवस्थामें मनकी स्थिति तथा गुणातीत ब्रह्मकी प्राप्ति का उपाय ... ४९७४
- २१७—सच्चिदानन्दधन परमात्मा, दृश्यवर्ग, प्रकृति और पुरुष (जीवात्मा)—उन चारोंके ज्ञानसे मुक्तिक का कथन तथा परमात्मप्राप्तिके अन्य साधनोंका भी वर्णन ... ४९७६
- २१८—राज्य जनकके दरबारमें पञ्चशिल्पका आगमन और उनके द्वारा नास्तिक मतोंके निराकरणपूर्वक शरीरसे भिन्न आत्माकी नित्य-सत्ताका प्रतीपादन ... ४९७९
- २१९—पञ्चशिल्पके द्वारा मोक्षतत्त्वका विवेचन एवं भगवान् विष्णुद्वारा मिथिलानरेश जनकवंशी जनदेवकी परीक्षा और उनके लिये कर-ग्रहण ... ४९८१
- २२०—स्येतकेतु और सुषुप्तका विवाह, दोनों पति-पत्नीका अध्यात्मविषयक संवाद तथा गार्हस्थ्यधर्मका पालन करते हुए ही उनका परमात्माकी प्राप्ति होना एवं दमकी महिमा का वर्णन ... ४९८८
- २२१—मत, तप, उपवास, ब्रह्मचर्य तथा अतिथि-सेवा आदिका विवेचन तथा यशश्चिह्न अन्नका भोजन करनेवालेको परम उत्तम गति की प्राप्ति का कथन ... ४९९७
- २२२—सन्तकुमारजीका श्रुतिवृक्षोंकी भगवत्स्वरूपका उपदेश देना ... ४९९८
- २२३—इन्द्र और बलिका संवाद—इन्द्रके आक्षेप-बुद्धि-वर्णन के द्वारा कठोर मनुष्य ५००४

- २२४-यलि और इन्द्रका संवाद; यलिके द्वारा कालकी प्रवृत्ताका प्रतिपादन करते हुए इन्द्रको फटकारना ... ५००६
- २२५-इन्द्र और लक्ष्मीका संवाद; यलिको त्यागकर आयी हुई लक्ष्मीकी इन्द्रके द्वारा प्रतिष्ठा ... ५०१०
- २२६-इन्द्र और नमुचिका संवाद ... ५०१४
- २२७-इन्द्र और यलिका संवाद; काल और प्रारम्भकी महिमाका वर्णन ... ५०१६
- २२८-दैत्योको त्यागकर इन्द्रके पास लक्ष्मीदेवीका आना तथा किन सद्गुणोंके होनेपर लक्ष्मी आती है और किन दुर्गुणोंके होनेपर वे त्यागकर चली जाती हैं; इस बातको विस्तारपूर्वक बताना ... ५०२५
- २२९-जैगीपव्यका असित-देवको समत्वबुद्धिका उपदेश ... ५०३१
- २३०-श्रीकृष्ण और उग्रसेनका संवाद-नारदजीकी लोकप्रियताके हेतुभूत गुणोंका वर्णन ... ५०३३
- २३१-शुकदेवजीका प्रश्न और व्यासजीका उनके प्रश्नोंका उत्तर देते हुए कालका स्वरूप बताना ... ५०३५
- २३२-व्यासजीका शुकदेवको सृष्टिके उत्पत्तिक्रम तथा युगधर्मोंका उपदेश ... ५०३७
- २३३-ब्राह्मप्रलय एवं महाप्रलयका वर्णन ... ५०४०
- २३४-ब्राह्मणोंका कर्तव्य और उन्हें दान देनेकी महिमाका वर्णन ... ५०४१
- २३५-ब्राह्मणके कर्तव्यका प्रतिपादन करते हुए कालरूप नंदको पर करनेका उपाय बतलाना ... ५०४४
- २३६-ध्यानके सहायक योग; उनके फल और सात प्रकारकी धारणाओंका वर्णन तथा सांख्य एवं योगके अनुसार ज्ञानद्वारा मोक्षकी प्राप्ति ... ५०४६
- २३७-सृष्टिके समस्त कार्योंमें बुद्धिकी प्रधानता और प्राणियोंकी श्रेष्ठताके तारतम्यका वर्णन ... ५०४९
- २३८-नाना प्रकारके भूतोंकी समीक्षापूर्वक कर्मतत्त्वका विवेचन; युगधर्मका वर्णन एवं कालका महत्त्व ... ५०५१
- २३९-ज्ञानका साधन और उसकी महिमा ... ५०५३
- २४०-योगसे परमात्माकी प्राप्ति का वर्णन ... ५०५५
- २४१-कर्म और ज्ञानका अन्तर तथा ब्रह्म-प्राप्तिके उपायका वर्णन ... ५०५८
- २४२-आश्रमधर्मकी प्रस्तावना करते हुए ब्रह्मचर्य-आश्रमका वर्णन ... ५०५९
- २४३-ब्राह्मणोंके उपलक्षणसे गार्हस्थ्य-धर्मका वर्णन ... ५०६१
- २४४-वानप्रस्थ और संन्यास-आश्रमके धर्म और महिमाका वर्णन ... ५०६३
- २४५-संन्यासीके आचरण और ज्ञानवान् संन्यासीकी प्रशंसा ... ५०६६
- २४६-परमात्माकी श्रेष्ठता; उसके दर्शनका उपाय तथा इस ज्ञानमय उपदेशके पाषाण निर्णय ... ५०६९
- २४७-महाभूतोंके तत्त्वोंका विवेचन ... ५०७१
- २४८-बुद्धिकी श्रेष्ठता और प्रकृति-पुरुष-विवेक ... ५०७२
- २४९-ज्ञानके साधन तथा ज्ञानीके लक्षण और महिमा ... ५०७४
- २५०-परमात्माकी प्राप्ति का साधन; संसार-नदीका वर्णन और ज्ञानसे ब्रह्मकी प्राप्ति ... ५०७५
- २५१-ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मणके लक्षण और परब्रह्मकी प्राप्ति का उपाय ... ५०७७
- २५२-शरीरमें पञ्चभूतोंके कार्य और गुणोंकी पहचान ... ५०७९
- २५३-स्थूल, सूक्ष्म और कारण-शरीरसे भिन्न जीवात्मा-का और परमात्माका योगके द्वारा साक्षात्कार करनेका प्रकार ... ५०८०
- २५४-कामरूपी अद्भुत बुद्धका तथा उसे काटकर मुक्ति प्राप्त करनेके उपायका और शरीररूपी नगरका वर्णन ... ५०८१
- २५५-पञ्चभूतोंके तथा मन और बुद्धिके गुणोंका विलुप्त वर्णन ... ५०८२
- २५६-बुधिशिरका मृत्युविषयक प्रश्न; नारदजीका राजा अकम्भनसे मृत्युकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग सुनाते हुए ब्रह्माजीकी रोषाग्निसे प्रजाके दग्ध होनेका वर्णन ... ५०८३
- २५७-महादेवजीकी प्रार्थनासे ब्रह्माजीके द्वारा अपनी रोषाग्नि का उपसंहार तथा मृत्युकी उत्पत्ति ... ५०८५
- २५८-मृत्युकी चोर तपस्या और प्रजापतिकी आज्ञासे उसका प्राणियोंके संहारका कार्य स्वीकार करना ... ५०८६
- २५९-धर्माधर्मके स्वरूपका निर्णय ... ५०८९
- २६०-बुधिशिरका धर्मकी प्रामाणिकतापर संदेह उपस्थित करना ... ५०९१
- २६१-जाजलिकी चोर तपस्या; सिरपर जटाओंमें पक्षियोंके मौखला बनानेसे उनका अभिमान और आकाशवाणीकी प्रेरणासे उनका तुलाधार वैश्यके पास जाना ... ५०९३
- २६२-जाजलि और तुलाधारका धर्मके विषयमें संवाद ... ५०९६
- २६३-जाजलिकी तुलाधारका आत्मयज्ञविषयक धर्मका उपदेश ... ५१००
- २६४-जाजलिकी पक्षियोंका उपदेश ... ५१०३



- २६५—राजा विचित्रविक्रम द्वारा अहिंसा-धर्मकी प्रशंसा ५१०५
- २६६—महर्षि गौतम और चिरकारीका उपाख्यान—  
दीर्घकालतक सोच-विचारकर कार्य करनेकी  
प्रशंसा ... ५१०६
- २६७—सुमतेन और सत्यवानका संवाद—अहिंसा-  
पूर्वक राज्यशासनकी श्रेष्ठताका कथन ... ५१११
- २६८—सुमरसिंह और कविलका संवाद—सुमरसिंहके  
द्वारा यशकी अवश्यकताका निरूपण ... ५११५
- २६९—प्रकृति एवं निवृत्तिमार्गके विषयमें सुमरसिंह-  
कविल-संवाद ... ५११७
- २७०—सुमरसिंह-कविल-संवाद—चारों आश्रमोंमें  
उत्तम साधनोंके द्वारा ब्रह्मकी प्राप्ति का कथन ५१२३
- २७१—धन और काम-भोगोंकी अपेक्षा धर्म और  
तपस्याका उत्कर्ष सूचित करनेवाली ब्राह्मण  
और कुण्डभार मेघकी कथा ... ५१२६
- २७२—यशमें हिंसाकी निन्दा और अहिंसाकी प्रशंसा ५१३०
- २७३—धर्म, अधर्म, वैराग्य और मोक्षके विषयमें  
युधिष्ठिरके चार प्रश्न और उनका उत्तर ... ५१३२
- २७४—मोक्षके साधनका वर्णन ... ५१३३
- २७५—जीवात्माके देहाभिमानसे मुक्त होनेके विषयमें  
नारद और अस्थित देवसूक्त संवाद ... ५१३५
- २७६—तृष्णाके परित्यागके विषयमें माण्डव्य मुनि  
और जनकका संवाद ... ५१३७
- २७७—शरीर और संसारकी अस्तित्वता तथा आत्म-  
कल्याणकी इच्छा रखनेवाले पुरुषके कर्तव्यका  
निर्देश—पिता-पुत्रका संवाद ... ५१३८
- २७८—हारीत मुनिके द्वारा प्रतिपादित संन्यासीके  
स्वभाव, आचरण और धर्मोंका वर्णन ... ५१४२
- २७९—ब्रह्मकी प्राप्ति का उपाय तथा उस विषयमें  
वृष-शुक-संवादका आरम्भ ... ५१४३
- २८०—वृषासुरको सनत्कुमारका अभ्यात्मविषयक  
उपदेश देना और उसकी परम गति तथा  
भीष्मद्वारा युधिष्ठिरकी राज्याका निवारण ५१४६
- २८१—इन्द्र और वृषासुरके युद्धका वर्णन ... ५१५१
- २८२—वृषासुरका यध और उसके प्रकट हुई ब्रह्म-  
हत्याका ब्रह्माजीके द्वारा चार स्थानोंमें विभाजन ५१५५
- २८३—शिवजीद्वारा दक्षयज्ञ मंग और उनके क्रोधसे  
श्वरकी उत्पत्ति तथा उसके विविध रूप ... ५१६०
- २८४—मार्कण्डेय रोष एवं खेदका निवारण करनेके लिये  
भगवान् शिवके द्वारा दक्षयज्ञका विध्वंस, दक्ष-  
द्वारा किये हुए शिवसहस्रनामस्तोत्रसे संतुष्ट  
होकर महादेवजीका उन्हें करदान देना तथा  
इस स्तोत्रकी महिमा ... ५१६४
- २८५—अध्यात्मज्ञानका और उसके फलका वर्णन ५१७८
- २८६—समझके द्वारा नारदजीसे अपनी शोकहीन  
स्थिति का वर्णन ... ५१८२
- २८७—नारदजीका गालनमुनिको श्रेयका उपदेश ५१८६
- २८८—भरिहनेमिका राजा समरको वैराग्योत्पादक  
मोक्षविषयक उपदेश ... ५१८८
- २८९—भृगुपुत्र उद्यनाका चरित्र और उन्हें शुक  
नामकी प्राप्ति ... ५१९१
- २९०—पराशरगीताका आरम्भ—पराशरमुनिका  
राजा जनकको कल्याणकी प्राप्ति के साधनका  
उपदेश ... ५१९४
- २९१—पराशरगीता—कर्मफलकी अनिवार्यता तथा  
पुण्यकर्मसे ज्ञान ... ५१९६
- २९२—पराशरगीता—धर्मोपाधिक धनकी श्रेष्ठता,  
अतिथि-स्त्कारका महत्त्व, पाँच प्रकारके  
श्रुतोंसे छूटनेकी विधि, भगवत्सत्त्वकी  
महिमा एवं सदाचार तथा गुणजनोंकी सेवासे  
महान् लाभ ... ५१९८
- २९३—पराशरगीता—शूद्रके लिये सेवावृत्तिकी  
प्रधानता, सत्सङ्गकी महिमा और चारों  
वर्णोंके धर्मपालनका महत्त्व ... ५२००
- २९४—पराशरगीता—ब्राह्मण और शूद्रकी जीविका,  
निन्दनीय कर्मोंके त्यागकी आशा, मनुष्योंमें  
असुरभावकी उत्पत्ति और भगवान् शिवके  
द्वारा उसका निवारण तथा स्वधर्मके अनुसार  
कर्तव्यपालनका आदेश ... ५२०२
- २९५—पराशरगीता—विद्यवाचक मनुष्यका पतन,  
तपोव्रतकी श्रेष्ठता तथा दृढ़तापूर्वक स्वधर्म-  
पालनका आदेश ... ५२०४
- २९६—पराशरगीता—वर्णविशेषकी उत्पत्ति का रहस्य,  
सप्तोक्तसे उत्कृष्ट वर्णोंकी प्राप्ति, विभिन्न  
वर्णोंके विशेष और सामान्य धर्म, सत्कर्मकी  
श्रेष्ठता तथा हिंसारहित धर्मका वर्णन ... ५२०७
- २९७—पराशरगीता—नाना प्रकारके धर्म और  
कर्तव्योंका उपदेश ... ५२०९
- २९८—पराशरगीताका उपसंहार—राजा जनकके  
विविध प्रश्नोंका उत्तर ... ५२१३
- २९९—हंसगीता—हंसरूपधारी ब्रह्माका साध्याणोंको  
उपदेश ... ५२१६
- ३००—सौख्य और योगका अन्तर बतलाते हुए  
योगमार्गके स्वरूप, साधन, फल और प्रभाव-  
का वर्णन ... ५२२०

- ३०१-सांख्ययोगके अनुसार साधन और उसके फलका वर्णन ... ५२२५
- ३०२-वसिष्ठ और करालजनकका संवाद—शर और अक्षरसत्त्वका निरूपण और इनके ज्ञानसे मुक्ति ५२३२
- ३०३-प्रकृति-संसर्गके कारण जीवका अपनेको नाना प्रकारके कर्मोंका कर्ता और भोक्ता मानना एवं नाना योनियोंमें बारंबार जन्म ग्रहण करना ५२३५
- ३०४-प्रकृतिके संसर्गदोषसे जीवका पतन ... ५२३९
- ३०५-शर-अक्षर एवं प्रकृति-पुरुषके विषयमें राजा जनककी शङ्का और उसका वसिष्ठजीद्वारा उत्तर ५२४०
- ३०६-योग और सांख्यके स्वरूपका वर्णन तथा आत्मज्ञानसे मुक्ति ... ५२४२
- ३०७-विद्या-अविद्या, अक्षर और शर तथा प्रकृति और पुरुषके स्वरूपका एवं विवेकीके उद्धारका वर्णन ... ५२४६
- ३०८-शर-अक्षर और परमात्मसत्त्वका वर्णन, जीवके नानात्व और एकत्वका दृष्टान्त, उपदेशके अधिकारी और जनधिकारी तथा इस ज्ञानकी परम्पराको बताते हुए वसिष्ठ-करालजनक-संवादका उपसंहार ... ५२४९
- ३०९-जनकवंशी वसुमान्को एक मुनिका धर्म-विषयक उपदेश ... ५२५३
- ३१०-याज्ञवल्क्यका राजा जनकको उपदेश—सांख्यमतके अनुसार चौबीस तत्त्वों और नौ प्रकारके सगोंका निरूपण ... ५२५५
- ३११-अव्यक्त, महत्त्व, अहंकार, मन और विषयोंकी कालसंख्याका एवं सृष्टिका वर्णन तथा इन्द्रियोंमें मनकी प्रधानताका प्रतिपादन ५२५७
- ३१२-संहारकर्मका वर्णन ... ५२५८
- ३१३-अध्यात्म, अभिभूत और अभिदैवतका वर्णन तथा सात्त्विक, राजस और तामस भावोंके लक्षण ५२५९
- ३१४-सात्त्विक, राजस और तामस प्रकृतिके मनुष्योंकी गतिका वर्णन तथा राजा जनकके प्रश्न ५२६१
- ३१५-प्रकृति-पुरुषका विवेक और उसका फल ... ५२६२
- ३१६-योगका वर्णन और उसके साधनसे परब्रह्म परमात्माकी प्राप्ति ... ५२६४
- ३१७-विभिन्न अङ्गोंसे प्राणोंके उत्क्रमणका फल तथा मृत्युसूचक लक्षणोंका वर्णन और मृत्युकी जीतनेका उपाय ... ५२६६
- ३१८-याज्ञवल्क्यद्वारा अपनेको सूर्यसे वेदज्ञानकी प्राप्तिका प्रसङ्ग सुनाना, विश्वाससुको जीवात्मा और परमात्माकी एकताके ज्ञानका उपदेश देकर उसका फल मुक्ति बताना तथा जनकको उपदेश देकर निदा होना ... ५२६७

- ३१९-जरा-मृत्युका उल्लङ्घन करनेके विषयमें पञ्च-विंश और राजा जनकका संवाद ... ५२७५
- ३२०-राजा जनककी परीक्षा करनेके लिये आयी हुई सुलभाका उनके शरीरमें प्रवेश करना, राजा जनकका उसपर दोषारोपण करना एवं सुलभाका मुक्तियोंद्वारा निराकरण करते हुए राजा जनकको अज्ञानी बताना ... ५२७६
- ३२१-व्यासजीका अपने पुत्र शुकदेवको वैराग्य और धर्मपूर्ण उपदेश देते हुए सावधान करना ५२८९
- ३२२-शुभाशुभ कर्मोंका परिणाम कर्ताको अवश्य भोग्य पड़ता है, इसका प्रतिपादन ... ५२९६
- ३२३-व्यासजीकी पुत्रप्राप्तिके लिये तपस्या और भगवान् शङ्करसे वर-प्राप्ति ... ५२९८
- ३२४-शुकदेवजीकी उत्पत्ति और उनके यशोपवीत, वेदाध्ययन एवं समावर्तन संस्कारका वृत्तान्त ५२९९
- ३२५-पिताकी आज्ञासे शुकदेवजीका मिथिलामें जाना और वहाँ उनका द्वारपाल, मन्त्री और युवती स्त्रियोंके द्वारा संकृत होनेके उपरान्त भ्रान्तमें स्थित हो जाना ... ५३०१
- ३२६-राजा जनकके द्वारा शुकदेवजीका पूजन तथा उनके प्रश्नका समाधान करते हुए ब्रह्मचर्या-धर्ममें परमात्माकी प्राप्ति होनेके बाद अन्य तीनों आश्रमोंकी अनावश्यकताका प्रतिपादन करना तथा शुक पुरुषके लक्षणोंका वर्णन ... ५३०४
- ३२७-शुकदेवजीका पिताके पास छोट आना तथा व्यासजीका अपने शिष्योंको स्वाध्यायकी विधि बताना ... ५३०८
- ३२८-शिष्योंके जानेके बाद व्यासजीके पास नारद-जीका आगमन और व्यासजीको वेदपाठके लिये प्रेरित करना तथा व्यासजीका शुकदेव-की अनप्यावका कारण बताते हुए 'प्रवह' आदि सात बासुओंका परिचय देना ... ५३११
- ३२९-शुकदेवजीको नारदजीका वैराग्य और ज्ञान-का उपदेश ... ५३१५
- ३३०-शुकदेवको नारदजीका सदाचार और अध्यात्मविषयक उपदेश ... ५३१८
- ३३१-नारदजीका शुकदेवको कर्मफल-प्राप्तिमें परतन्त्रताविषयक उपदेश तथा शुकदेवजीका सूर्यलोकमें जानेका निश्चय ... ५३२१
- ३३२-शुकदेवजीकी ऊर्ध्वगतिका वर्णन ... ५३२५
- ३३३-शुकदेवजीकी परमपद-प्राप्ति तथा पुत्र-शोकसे व्याकुल व्यासजीको महादेवजीका आश्वासन देना ५३२७

- १३४-नदरिकाभूमिमें नारदजीके पूछनेपर भगवान् नारायणका परमदेव परमात्माको ही सर्वभूषण पूजनीय बताना ... ५३२९
- १३५-नारदजीका श्वेतद्वीपदर्शन; वहाँके निकासियोंके स्वरूपका वर्णन; राजा उपरिचरका चरित्र तथा पाञ्चरात्रकी उत्पत्तिका प्रसङ्ग ... ५३३२
- १३६-राजा उपरिचरके यज्ञमें भगवान्‌पर बृहस्पतिका क्रोधित होना; एकल आदि मुनियोंका बृहस्पतिसे श्वेतद्वीप एवं भगवान्‌की महिमाका वर्णन करके उनको घान्त करना ... ५३३६
- १३७-यज्ञमें आहुतिके छिमे अजका अर्थ अस है बकरा नहीं—इस बातको जानते हुए भी पक्षपात करनेके कारण राजा उपरिचरके अधःपतनकी और भगवान्‌-कृपासे उनके पुनरुत्थानकी कथा ... ५३४०
- १३८-नारदजीका दो सौ नामोंद्वारा भगवान्‌की स्तुति करना ... ५३४३
- १३९-श्वेतद्वीपमें नारदजीको भगवान्‌का दर्शन; भगवान्‌का नासुदेव-सङ्कर्षण आदि अपने बृहत्स्वरूपोंका परिचय करना और भविष्यमें होनेवाले अवतारोंके कार्योंकी सूचना देना और इस कथाके अवलम्बनका माहात्म्य ... ५३४५
- १४०-व्यासजीका अपने शिष्योंको भगवान्‌द्वारा ब्रह्मादि देवताओंसे कहे हुए प्रवृत्ति और निवृत्तिरूप धर्मके उपदेशका रहस्य बताना ... ५३५४
- १४१-भगवान्‌ श्रीकृष्णका अर्जुनको अपने प्रभावका वर्णन करते हुए अपने नामोंकी स्तुति एवं माहात्म्य बताना ... ५३६२
- १४२-सृष्टिकी प्रारम्भिक अवस्थाका वर्णन; ब्राह्मणोंकी महिमा बतानेवाली अनेक प्रकारकी संक्षिप्त कथाओंका उल्लेख; भगवान्‌मार्गके हेतु तथा वृत्रके साथ होनेवाले युद्धमें नारायणकी विजय ... ५३६५
- १४३-अनन्तेजयका प्रश्न; देवर्षि नारदका श्वेतद्वीपसे लौटकर नर-नारायणके पास जाना और उनके पूछनेपर उनसे वहाँके महत्त्वपूर्ण वृत्तका वर्णन करना ... ५३७८
- १४४-नर-नारायणका नारदजीकी प्रशंसा करते हुए उन्हें भगवान्‌ वासुदेवका माहात्म्य बतलाना ... ५३८२
- १४५-भगवान्‌ धराहके द्वारा पितरोंके पूजनकी मर्यादाका स्थापित होना ... ५३८४
- १४६-नारायणकी महिमासम्बन्धी उपस्थानका उपसंहार ... ५३८६
- १४७-इयप्रीव-अवतारकी कथा; वेदोंका उद्धार; मधुकैटभ-वध तथा नारायणकी महिमाका वर्णन ... ५३८८
- १४८-स्रग्वन्त-धर्मकी उपदेश-परम्परा तथा भगवान्‌के प्रति ऐकान्तिक भावकी महिमा ... ५३९४
- १४९-व्यासजीका सृष्टिके प्रारम्भमें भगवान्‌ नारायणके अंशसे स्रस्वती-पुत्र अपान्तरतमाके रूपमें जन्म होनेकी और उनके प्रभावकी कथा ... ५४००
- १५०-वैजयन्त मर्तपर ब्रह्मा और वृत्रका मिलन एवं ब्रह्माजीद्वारा परम पुरुष नारायणकी महिमाका वर्णन ... ५४०५
- १५१-ब्रह्मा और वृत्रके संवादमें नारायणकी महिमाका विशेषरूपसे वर्णन ... ५४०७
- १५२-नारदके द्वारा इन्द्रको उच्छृङ्खलितवाले ब्राह्मणकी कथा सुनानेका उपक्रम ... ५४०९
- १५३-महापद्मपुरमें एक श्रेष्ठ ब्राह्मणके सदाचारका वर्णन और उसके घरपर अतिथिका आगमन ... ५४१०
- १५४-अतिथिद्वारा स्वर्गके विभिन्न भागोंका कथन ... ५४११
- १५५-अतिथिद्वारा नागराज पद्मनाभके सदाचार और सद्गुणोंका वर्णन तथा ब्राह्मणको उसके पास जानेके लिये प्रेरणा ... ५४१२
- १५६-अतिथिके वचनोंसे संतुष्ट होकर ब्राह्मणका उसके कथनानुसार नागराजके घरकी ओर प्रस्थान ... ५४१३
- १५७-नागपत्नीके द्वारा ब्राह्मणका सत्कार और वार्तालापके बाद ब्राह्मणके द्वारा नागराजके आगमनकी प्रतीक्षा ... ५४१४
- १५८-नागराजके दर्शनके लिये ब्राह्मणकी तपस्या तथा नागराजके परिवारवालोंका भोजनके लिये ब्राह्मणसे आग्रह करना ... ५४१५
- १५९-नागराजका घर लौटना; पत्नीके साथ उनकी धर्मविषयक बातचीत तथा पत्नीका उनसे ब्राह्मणकी दर्शन देनेके लिये अनुरोध ... ५४१७
- १६०-पत्नीके धर्मयुक्त वचनोंसे नागराजके अभिमान एवं रोषका नाश और उनका ब्राह्मणकी दर्शन देनेके लिये उद्यत होना ... ५४१८
- १६१-नागराज और ब्राह्मणका परस्पर मिलन तथा बातचीत ... ५४१९
- १६२-नागराजका ब्राह्मणके पूछनेपर सूर्यमण्डलकी आश्चर्यजनक घटनाओंको सुनाना ... ५४२१
- १६३-उच्छ एवं शीलहृत्तिते सिद्ध हुए पुरुषकी दिम्ब गति ... ५४२२
- १६४-ब्राह्मणका नागराजसे बातचीत करके और उच्छव्रतके पालनका निश्चय करके अपने घरको जानेके लिये नागराजसे विदा माँगना ... ५४२३
- १६५-नागराजसे विदा ले ब्राह्मणका ज्वन मुनिसे उच्छव्रतिकी दीक्षा लेकर साधनपरायण होना और इस कथाकी परम्पराका वर्णन ... ५४२४

## चित्र-सूची

### ( तिरंगा )

- १-शोकानुल सुधिष्ठिरकी देवर्षि नारदके द्वारा सन्तवना ... ४४२५
- २-महाभारतकी समाप्तिपर महाराज सुधिष्ठिरका हस्तिनापुरमें प्रवेश ... ४५१८
- ३-इन्द्रकी ब्राह्मणधर्ममें दैत्यराज प्रह्लादसे भेंट ... ४६२५
- ४-कपोतके द्वारा व्याधका आतिथ्य-सत्कार ... ४८०८
- ५-भगवान् नारायणके नाभि-कमलसे लोकमितामह ब्रह्माकी उत्पत्ति ... ४८२५
- ६-कौशिक ब्राह्मणकी सवित्रीदेवीका प्रत्यक्ष दर्शन ... ४९२३
- ७-भीकृष्णकी उग्रचेनसे भेंट ... ५०२५
- ८-वैश्य कुलाधारके द्वारा मुनि जाजलिका सत्कार ... ५०९७
- ९-नारदजीको भगवान्के विश्वरूपका दर्शन ... ५२२५
- १०-भगवान् हयग्रीव वेदोंको रसातलसे लेकर ब्रह्माजीको लौटा रहे हैं ... ५३९१

### ( सादा )

- ११-सुवर्णमय पक्षीके रूपमें देवराज इन्द्रका संन्यासी बने हुए ब्राह्मण-बालकोंको उपदेश ... ४४४६
- १२-स्वयं भीकृष्ण शोकमग्न सुधिष्ठिर-को समझा रहे हैं ... ४४८७
- १३-ध्यानमग्न भीकृष्णसे सुधिष्ठिर प्रभ-कर रहे हैं ... ४५३०
- १४-भगवान् भीकृष्णका देवर्षि नारद एवं पाण्डवोंको लेकर शरदध्या-स्थित भीष्मके निकट गमन ... ४५५६
- १५-राजासे हीन प्रजाकी ब्रह्माजीसे राजाके लिये प्रार्थना ... ४५७१
- १६-राजा बेनके बाहु-मन्थनसे महाराज पृथुका प्राकट्य ... ४५७६
- १७-राजा क्षेमदर्शी और कालकृष्णिय मुनि ... ४६३६
- १८-राजर्षि जनक अपने सैनिकोंको स्वर्ग और नरककी बात कह रहे हैं ... ४६७८
- १९-कालकृष्णिय मुनि राजा जनकका राजकुमार क्षेमदर्शीके साथ मेल करा रहे हैं ... ४६९८

- २०-समुद्र देवताका मूर्तिमती नदियोंके साथ संवाद ... ४७१६
- २१-यूदेकी सहायताके फलस्वरूप चाण्डाल-के आलसे बिलावकी मुक्ति ... ४७७४
- २२-मरे हुए ब्राह्मण-बालकपर तथा गीध-एवं गीदहपर कङ्कुरजीकी कृपा ... ४८२४
- २३-काश्यप ब्राह्मणके प्रति गीदहके रूपमें इन्द्रका उपदेश ... ४८८४
- २४-इन्द्रको पहचाननेपर काश्यपद्वारा उनकी पूजा ... ४८८४
- २५-महर्षि भृगुके साथ भरद्वाज मुनिका प्रश्नोत्तर ... ४८८९
- २६-जापक ब्राह्मण एवं महाराज हस्तिनाकुकी ऊर्ध्वगति ... ४९३३
- २७-ग्रामपति मनु एवं महर्षि बृहस्पतिकी संवाद ... ४९३४
- २८-भगवान् वराहकी श्रुतियोंद्वारा स्तुति ... ४९५६
- २९-महर्षि पञ्चशिक्षका महाराज जनकको उपदेश ... ४९८०
- ३०-देवर्षि एवं देवराजको भगवती लक्ष्मीका दर्शन ... ५०२६
- ३१-मुनि जाजलिकी तपस्या ... ५०९४
- ३२-चिरकारी धृष्ट त्यागकर अपने पिताको प्रणाम कर रहे हैं ... ५१११
- ३३-सनकादि महर्षियोंकी शुक्राचार्य एवं कृत्रासुरसे भेंट ... ५१४६
- ३४-दशके यशमें शिवजीका प्राकट्य ... ५१६८
- ३५-साध्यगणोंको हंसरूपमें ब्रह्माजीका उपदेश ... ५२१७
- ३६-महर्षि वशिष्ठका राजा कराल जनकको उपदेश ... ५२३३
- ३७-महर्षि याज्ञवल्क्यके स्मरणसे देवी सरस्वतीका प्राकट्य ... ५२६८
- ३८-राजा जनकके द्वारपर शुकदेवजी ... ५३०३
- ३९-राजा जनकके द्वारपर शुकदेवजीका पूजन ... ५३०४
- ४०-शुकदेवजीको नारदजीका उपदेश ... ५३१५
- ४१-नर-नारायणका नारदजीके साथ संवाद ... ५३३१
- ४३-( १६ तम चित्र फरमोंमें )